वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत
एम.ए. हिंदी
PART-1

(2018-2019, 2019-2020 एवम् 2020-2021 के शैक्षिक वर्षों के लिए)

प्रश्नपत्र - 1 प्राचीन एवम् मध्यकालीन काव्य Core Course-01 (Total Marks :100)

पाठ्य-पुस्तकें :

1. विद्यापति पदावली - संपा.डॉ. सुरेन्द्र दीक्षित (प्रकाशक-जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
2. जायसी-ग्रंथावली -संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रयारिणी सभा, वाराणसी)
3. बालकाण्ड : (रामचरितमानस) - तुलसीदास
4. घनानंद कवित्त : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (१ से ५० कवित्त) (संजय बुक सेन्टर, वाराणसी)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र :

इकाई-1. **विद्यापति पदावली : (17 से 50 क्रमांक पदावलियाँ)**
विद्यापति पदावली में यौवन –उद्गम का चित्रण।
विद्यापति पदावली में वर्णित सौन्दर्य चित्रण, विद्यापति काव्य का कलात्मक पक्ष।

इकाई-2. **जायसी- पद्मावत :**
'पद्मावत' में इतिहास और कल्पना, 'पद्मावत' में प्रबंधात्मकता, प्रेमाभिव्यंजना, रहस्यवाद, अन्योक्ति अथवा समासोक्ति और दार्शनिकता , 'पद्मावत' में विरह-वर्णन |

इकाई-3. **बालकाण्ड :**
'बालकाण्ड' का काव्य-स्वरूप, 'बालकाण्ड' का वस्तु-विधान,
'बालकाण्ड' में अभिव्यक्त कवि की बाल सहज वृत्ति, 'बालकाण्ड' का भाव और कला-पक्ष।

इकाई-4. **घनानंद कवित्त :**
'प्रेम की पीर' के कवि घनानंद, घनानंद की भक्ति-भावना, घनानंद के काव्य की विशेषताएँ।

इकाई-5 अ. **भक्तिकालः हिंदी साहित्य का सुवर्ण युग, विद्यापति पदावली में प्रेमानुभूति, विद्यापति पदावली में श्रृंगार चित्रण | भक्तिकालः सगुण भक्ति-धारा और तुलसीदास : रामभक्ति-धाराः उद्भव और विकास।**

ब. **हिंदी सूफी काव्य परंपरा , हिंदी सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान ।**
'पद्मावत' में प्रकृति-चित्रण, 'पद्मावत' काव्य-सौष्ठव।
रीतिकालीन काव्य-धाराएँ।
रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा में घनानंद का स्थान।

अंक-विभाजन – इकाई 1, 2, 3 और 4 से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)
इकाई 5 अ और ब से एक-एक टिप्पणी का प्रश्न (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी

2. भारतीय प्रेमाख्यान काव्य-डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव
3. जायसी-एक नई दृष्टि-डॉ.रघुवंश (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. हिंदी के प्राचीन कवि-डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
5. महाकवि जायसी और उनका काव्य-डॉ.इकबाल अहमद
6. पद्मावत का अनुशीलन-इन्द्रचन्द्र नारंग (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
7. जायसी ग्रंथावली-संपा.आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
8. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
9. विद्यापति पदावली-रामवृक्ष बेनीपुरी (राजकमल पकाशन, नई दिल्ली)
10. विद्यापति-जनार्दन मिश्र(रामनारायण लाल, इलाहाबाद)
11. तुलसी-संपा. उदयभानु सिह
12. तुलसी की साधना-आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र
13. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
14. तुलसीदास-नंदकिशोर नवल (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली)
15. तुलसीदास-संपा.डॉ.विश्वनाथ तिवारी (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
16. घनानंद और स्वच्छंद काव्य-धारा-डॉ.मनोहर गौड
17. घनानंद का काव्य-डॉ.रामदेव शुक्ल (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
18. घनानंद का काव्य-शिल्प- डॉ.लखनपाल सिंह

प्रश्नपत्र -2. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य-शास्त्र एवम् साहित्यालोचन

Core Course-02 (Total Marks :100)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई-1. रस-सिद्धांत -रस का स्वरूप, रस-निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण,
सहृदय की अवधारणा।
अलंकार –सिद्धांत की मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
रीति-सिद्धांत- रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवम् शैली,
रीति-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।
वक्रोक्ति -सिद्धांत -वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवम् अभिव्यंजनावाद।

इकाई-2. ध्वनि -सिद्धांत -ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ,
ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्र काव्य।
औचित्य -काव्य -प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद।

इकाई-3. प्लेटो - काव्य-सिद्धांत , अरस्तू - अनुकरण-सिद्धांत, लोंजाइनस - उदात्त की अवधारणा ,
ड्राईड्रन के काव्य – सिद्धांत, वर्ड्सवर्थ -काव्य-भाषा का सिद्धांत, हॉरेस का काव्य-चिंतन
कॉलरिज -कल्पना-सिद्धांत और ललित-कल्पना, मैथ्यू आर्नल्ड -आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य ।

इकाई-4. टी.एस.इलियट-परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत,
वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य, आई.ए.रिचर्ड्स - रागात्मक अर्थ,
संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

इकाई-5. अ. ज्योर्ज लुकाच की यथार्थवादी दृष्टि और साहित्य रूप। एफ.आर.लीविस-एक आलोचक के रूप में।
हिंदी कवि -आचार्यों का काव्य-शास्त्रीय चिंतन -लक्षण-काव्य-परंपरा एवम् कवि-शिक्षा।

व्यावहारिक समीक्षा -किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

ब. सिद्धांत और वाद-शास्त्रवाद,नव्यशास्त्रवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद-सामान्य परिचय व विशेषताएँ।
आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ-संरचनावाद, शैली-विज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद-सामान्य परिचय व विशेषताएँ।

अंक-विभाजन – इकाई 1, 2, 3 और 4 से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)

इकाई 5 अ और ब से एक-एक टिप्पणी का प्रश्न (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें :

1. रस-सिद्धांत-डॉ.नगेन्द्र (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली)
2. रस-सिद्धांत की दार्शनिक और नैतिक व्याख्या-डॉ.तारकनाथ बाली (विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा)
3. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका-डॉ.नगेन्द्र
4. अभिनव का रस विवेचन-नगीनदास पारेख
5. समीक्षा लोक-भगीरथ दीक्षित
6. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा-डॉ.नगेन्द्र
7. साहित्य काव्य-विमर्श-डॉ.राममूर्ति त्रिपाठी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
8. भारतीय एवम् पाश्चात्य काव्य सिद्धांत-डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
9. हिंदी आलोचना का विकास-नंदकिशोर नवल
10. काव्य के तत्त्व-देवेन्द्रनाथ शर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
11. अरस्तू का काव्यशास्त्र-डॉ.नगेन्द्र
12. काव्य में उदात्त-तत्व-डॉ.महेन्द्र चतुर्वेदी
13. उदात्त के बारे में-डॉ.निर्मला जैन
14. पाश्चात्य काव्य-शास्त्र की परंपरा-डॉ. नगेन्द्र
15. पाश्चात्य काव्यशास्त्र-डॉ.भगीरथ मिश्र
16. पाश्चात्य साहित्य-चिंतन-संपा.निर्मला जैन,कुसुम बाँठिया (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
17. कार्ल मार्क्स-कला और साहित्य-चितन-संपा.डॉ.नामवर सिंह
18. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद-सुधीश पचौरी (हिमाचल प्रकाशन भंडार, दिल्ली)
19. उत्तर आधुनिकता-कुछ विचार-संपा.देव शंकर नवीन तथा मिश्र (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
20. उत्तर आधुनिक:साहित्यिक विमर्श-सुधीश पचौरी

प्रश्नपत्र - 3. प्रयोजनमूलक हिंदी Core Course-03 (Total Marks :100)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र-

इकाई-1. कामकाजी हिंदी :

हिंदी के विभिन्न रूप- सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य-प्रारूपण, पत्र-लेखन, संक्षेपण, पल्लवन,टिप्पण।
पारिभाषिक शब्दावली- स्वरूप एवम् महत्व, पारिभाषिक शब्दावली- निर्माण के सिद्धांत।
ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली।

इकाई-2. हिंदी कंप्यूटिंग एवम् पत्रकारिता:

कम्प्यूटर- परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिशिंग का परिचय।
इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक , रख-रखाव एवम् इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र,
पत्रकारिता- स्वरूप एवम् विभिन्न प्रकार।
इंटरनेट एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप , लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना-प्राप्त करना,
हिंदी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग-अपलोडिंग, हिंदी सॉफ्टवेयर पैकेज।
हिंदी पत्रकारिता: उद्भव और विकास ।
प्रमुख प्रेस कानून एवम् आचार संहिता।

इकाई–3. मीडिया लेखन:

जनसंचार- प्रौद्योगिकी एवम् चुनौतियाँ।
विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप-मुद्रण, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट।
इंटरनेट- सामग्री सृजन।
श्रव्य माध्यम (रेडियो) मौखिक भाषा का प्रकृति, समाचार-लेखन एवम् वाचन, रेडियो नाटक।
उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन-लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज।
दृश्य-श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन एवम् वीडियो),दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति,
दृश्य एवम् श्रव्य सामग्री का सामंजस्य।

इकाई- 4. अनुवाद - सिद्धांत एवम् व्यवहार:

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवम् प्रविधि।
हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका।
कार्यालयी हिंदी और अनुवाद।
कार्यालयी अनुवाद- कार्यालयी एवम् प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ,
पदनाम, विभाग। पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद, सारानुवाद।

इकाई-5. अ. समाचार-लेखन-कला, संपादन के आधारभूत तत्व, व्यावहारिक प्रूफ शोधन ।
शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवम् शीर्षक-संपादन, संपादकीय-लेखन।
पृष्ठ-सज्जा , साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवम् प्रेस-प्रबंधन।

ब. व्यावहारिक -अनुवाद-गुजराती या अंग्रेजी से हिंदी में।

अंक-विभाजन – इकाई 1, 2, 3 और 4 से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)

इकाई 5 अ और ब से एक-एक टिप्पणी का प्रश्न (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. प्रयोजनमूलक हिंदी- कमल कुमार बोस (क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली)
2. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
3. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता-डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
4. राजभाषा प्रशासनिक शब्दकोश-डॉ.एस.त्यागी (भारत भारती, दिल्ली)
5. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन-डॉ.भोलानाथ तिवारी (वाणी प्रकाशन, दिल्ली)
6. अनुवाद-बोध-डॉ.गार्गी गुप्त
7. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
8. अनुवाद-विज्ञान-डॉ.भोलानाथ तिवारी
9. मीडिया-लेखन-डॉ.चंद्रप्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
10. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन
11. आधुनिक विज्ञापन और जन संपर्क-डॉ.तारेश भाटिया
12. समाचार फीचर लेखन एवम् संपादन कला--डॉ.हरिमोहन

13. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
14. हिंदी पत्रकारिता-कृष्ण बिहारी मिश्र (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)
15. कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग-विजयकुमार मल्होत्रा
16. संपादन कला एवम् प्रूफ पठन-डॉ.हरिमोहन
17. समाचार फीचर लेखन एवम् संपादन कला--डॉ.हरिमोहन
18. पत्रकारिता:विविध विधाएँ-डॉ.राजकुमारी रानी (जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
19. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ.हरिमोहन

==========

प्रश्नपत्र - 4. आधुनिक हिंदी काव्य Core Course-04 (Total Marks :100)

पाठ्य-पुस्तकें :

1. प्रियप्रवास – अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
2. उर्वशी - रामधारीसिंह 'दिनकर'
3. महा प्रस्थान – नरेश मेहता
4. संसद से सड़क तक –सुदामा पाण्डे 'धूमिल'

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र :

इकाई- 1. प्रियप्रवास – अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

'प्रियप्रवास' में विश्व कल्याण की कामना,
'प्रियप्रवास' का महाकाव्यत्व, 'प्रियप्रवास' - एक विरह काव्य,
'प्रियप्रवास' के पात्र- कृष्ण और राधा,
'प्रियप्रवास' में अभिव्यक्त मनोवैज्ञानिकता, 'प्रियप्रवास' का भाव पक्ष और कला पक्ष।

इकाई-2. उर्वशी - रामधारीसिंह 'दिनकर'

'उर्वशी' के सांस्कृतिक आधार, युगीन आदर्श, दार्शनिकता,
'उर्वशी' की प्रबंधात्मकता, उर्वशी और पुरुरवा का चरित्र- चित्रण।
'उर्वशी' प्रेम और सौन्दर्य का काव्य, 'उर्वशी' का भाव पक्ष और कला पक्ष।

इकाई-3. महाप्रस्थान – नरेश मेहता

'महा प्रस्थान' का काव्य- स्वरूप,
महा प्रस्थान' के मुख्य पात्र- युधिष्ठिर, द्रौपदी, भीम, अर्जुन , महाप्रस्थान' का सन्देश ,
महा प्रस्थान' का स्वर्ग पर्व , 'महाप्रस्थान' का भाव पक्ष और कलापक्ष |

इकाई-4. संसद से सडक तक – धूमिल'

'संसद से सड़क तक', में आधुनिकता-बोध,
'संसद से सड़क तक' में अस्तित्ववादी एवं क्षणवादी जीवन-दर्शन,
'संसद से सड़क तक' आत्मबोध का काव्य, 'संसद से सड़क तक' में भावात्मकता, लोकतंत्र,
राजनीति का चित्रण | 'संसद से सड़क तक' का भाव और कला-पक्ष।

इकाई-5. अ. द्विवेदीयुगीन काव्य में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान
'प्रियप्रवास' के गौण पात्र।
राष्ट्रवादी कविता और 'दिनकर', 'उर्वशी' के गौण पात्र।

ब. प्रयोगवादी एवम् नई कविता : प्रवर्तक और विशेषताएँ, महा प्रस्थान' के गौण पात्र |
स्वातंत्र्योत्तर हिंदी प्रबंध – काव्य- जनवादी काव्य, यथार्थवादी समकालीन काव्य

अंक-विभाजन – इकाई 1, 2, 3 और 4 से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 4 = 80 अंक)

इकाई 5 अ और ब से एक-एक टिप्पणी का प्रश्न (10 x 2 = 20 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
3. छायावाद-डॉ.नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली)
4 आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. युग चारण दिनकर – सावित्री सिन्हा
6. दिनकर का काव्य –डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
7. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
10. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ.लक्ष्मीसागर वाष्णेय (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

==========

प्रश्नपत्र – 5. विशिष्ट युग प्रवृति अध्ययन : आदिकाल एवम् दृश्य-श्रव्य माध्यम-लेखन

Core Course-05 (Total Marks :100)

पाठ्य-पुस्तकें : 1. सन्देश रासक - अब्दुल रहमान संपा.हजारीप्रसाद द्विवेदी-विश्वनाथ त्रिपाठी (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)

2. ढोला मारू रा दूहा – कुशल लाभ संपा.रामसिंह, सूर्यकिरण पारीक, नरोत्तम स्वामी (राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर)

अध्ययन के लिए निर्धारित क्षेत्र :

इकाई-1. अपभ्रंश: अर्थ और स्वरूप, साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश का विकास, अपभ्रंश काव्य-प्रबंधात्मक, मुक्तक, नीति, वीर और श्रृंगार काव्य-धाराएँ अपभ्रंश और हिंदी काव्य का संबंध। आदि काव्य की साहित्यिक प्रवृति-ऐतिहासिक, श्रृंगारिक एवम् लौकिक काव्य। आदि काव्य की शिल्प-गत विशेषताएँ-कथानक-शैलियाँ एवम् रूढियाँ, गेयता, काव्य-रूप एवम् भाषा।

इकाई-2. सन्देश रासक - अब्दुल रहमान : कवि अब्दुल रहमान का परिचय , 'सन्देश रासक' : आदिकाल की एक प्रमुख रचना, 'सन्देश रासक' का कथानक, 'सन्देश रासक' : विरह-वर्णन, ऋतु-वर्णन , 'सन्देश रासक' का भाव-पक्ष और कला-पक्ष |

इकाई-3. ढोला मारू रा दूहा –कुशल लाभ 'ढोला मारू रा दूहा': एक श्रेष्ठ मुक्त काव्य, 'ढोला मारू रा दूहा' में श्रृंगार-चित्रण, 'ढोला मारू रा दूहा': सौंदर्य-चित्रण, ढोला और मालवणी, 'ढोला मारू रा दूहा': काव्य-सौष्ठव, 'ढोला मारू रा दूहा' में मारवणी का विरह-वर्णन ।

इकाई-4 माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार, हिंदी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास,

हिंदी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ।
टी.वी. नाटक की तकनीक, संचार माध्यम के अन्य विविध रूप।

इकाई-5 टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी.धारावाहिक में साम्य-वैषम्य, साहित्यिक विधाओं की दृश्य-श्रव्य रूपांतरण-कला।
रेडियो नाटक की प्रविधि, रंगनाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक में अंतर।
रेडियो नाटक के प्रमुख भेद-रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी,
इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन-संपादन और प्रस्तुतीकरण की प्रविधि।

अंक-विभाजन – सभी इकाईयों से एक – एक आलोचनात्मक प्रश्न (20 x 5 = 100 अंक)

संदर्भ-पुस्तकें-

1. हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचंद्र शुक्ल
3. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ.रामकुमार वर्मा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
4. हिंदी साहित्य का आदिकाल-डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. हिंदी का गद्य-साहित्य-डॉ. रामचंद्र तिवारी
6. हिंदी गद्य का विकास-डॉ.प्रसाद
7. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-डॉ.बच्चन सिंह
8. मीडिया-लेखन-डॉ. चंद्र प्रकाश मिश्र (संजय प्रकाशन, दिल्ली)
9. दूरदर्शन की भूमिका-सुधीश पचौरी
10. जनसंचार-विविध आयाम-ब्रज मोहन गुप्त
11. मीडिया और साहित्य-सुधीश पचौरी
12. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता-डॉ. हरिमोहन
13. भारतीय इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-देवव्रत सिंह (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
14. मीडिया और बाजारवाद-रामशरण जोशी (राधाकृष्ण प्रकाशन)
15. फीचर लेखनःस्वरूप और शिल्प- डॉ.मनोहर प्रभाकर (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली)
16. समाचार संपादन-कमल दीक्षित, महेश दर्पण (राधाकृष्ण प्रकाशन)
17. टेलीविज़न कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया-महाराज शाह (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)
18. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया-पी.के.आर्य (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली)

==========